## *Dr. REETU RAJ*

*Assistant Professor*

*Department of HISTORY*

*RAJA SINGH COLLEGE SIWAN*

*(Jai Prakash University Chapra)*


# *Lecture Notes on -* "विजयनगर साम्राज्य की स्थापना एवं उत्कर्ष ।" *( for TDC Part 2 HISTORY HONOURS)*

# विजयनगर साम्राज्य  की स्थापना  एवं उत्कर्ष ।

दक्षिण भारत में दो प्रमुख साम्राज्य थे-(1) विजयनगर (2) बहमनी साम्राज्य। इन दोनों साम्राज्यो के शासक एक दूसरे से परस्पर युद्ध करते रहते थे। आपसी युद्ध के कारण वे अपनी शक्ति व्यय कर रहे थे। विजयनगर साम्राज्य हिन्दू प्रधान था और या सुदूर दक्षिण में अवस्थित था।विजयनगर साम्राज्य की स्थापना मुहम्मद बिन तुगलक के शासनकाल के दौरान हुई। उसकी उत्पत्ति के सम्बन्ध में अनेक मत प्रचलित हैं और वर्तमान में भी विवाद बना हुआ है, परन्तु डॉ. आशीर्वादीलाल श्रीवास्तव के अनुसार, संगम के पाँच पुत्रों में से दो हरिहर और बुक्का ने 1336 ई. में इस साम्राज्य की स्थापना की। हरिहर एवं बुक्का प्रारम्भ में वारंगल के काकतियों के सामन्त रह चुके थे। बाद में वे आधुनिक कर्नाटक में स्थित कांपली के राज्य की सेवा में लिप्त हो गये। जब एक मुस्लिम विद्रोही को कांपली के शासक ने अपने यहां शरण दी तो मुहम्मद बिन तुगलक ने कांपली को रौंद कर सल्तनत में मिला लिया। इसी के साथ कैदी के रूप में हरिहर व बुक्का भी लाये गये, जहां उनसे इस्लाम कबूल

कराया गया।

जब कांपली में तुर्की शासन के विरूद्ध विद्रोह हुआ तो उसी समय हरिहर एवं बुक्का को उसका दमन करने के लिये भेजा गया। वहां पहुंच कर उन्होंने माधव विद्यारण्य के प्रभाव से हिन्दूधर्म ग्रहण किया और विजयनगर साम्राज्य की स्थापना की।

हरिहर बुक्का  के नेतृत्व में संगम वंश की सत्ता 1336 ई. से 1446 ई. तक बनी रही। 1346 ई. में बल्लाल के उत्तराधिकारी विरुपाक्ष की मृत्यु हो जाने पर होयसल राज्य की सत्ता हरिहर एवं बुक्का के हाथो में केन्द्रित हो गई और इन्होंने अनुगुन्दी नगर (विजयनगर) को अपनी राजधानी बनाया। हरिहर व बुक्का को साम्राज्य की स्थापना के लिए प्रसिद्ध सन्त एवं विद्वान्  माधव विद्यारण्य ने तथा उनके अनुज व वेदों के प्रसिद्ध टीकाकार सायणाचार्य द्वारा प्रेरणा दी गई थी। इसी अवधि में बहमनी साम्राज्य की स्थापना हुई और दक्षिण भारत में प्रबुद्ध रूप से संघर्ष आरम्भ हुआ।

1486 ई. में सुलुव वंश की स्थापना हुई और फिर 1505 ई. में तुलुव वंश की स्थापना हुई। इस वंश के शासक

कृष्णदेवराय के समय विजयनगर साम्राज्य का उत्कर्ष हुआ। उसने उड़ीसा, बीदर, गोलकुण्डा आदि राज्यों पर विजय प्राप्त की।

1565 ई. तालीकोट्टा के युद्ध के पश्चात् विजयनगर का अस्तित्व तो रहा किन्तु उसकी शक्ति क्षीण हो गई और अरविडू वंश के नेतृत्व में 1615 ई. तक साम्राज्य का अस्तित्व बना रहा। फिर अनेक क्षेत्रीय राज्यों का उदय हुआ।

References: Internet & Competitive books.